ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-6* July- 2020
Innovation The Research Concept

लोक साहित्य के सम्प्रदाय
Cults of Folk Literature

Paper Submission: 12/07/2020, Date of Acceptance: 28/07/2020, Date of Publication: 29/07/2020

रामाश्रय सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

लोक साहित्य की अपनी विशेषताएँ हैं। जनसंस्कृति हुबहुब दिखाई देती हैं। सरलता सरसता, एवं स्वाभविकता में अव्वल है। लोक कथा संसार के समस्त कथा साहित्य की जनक है। लोकगीत सकल काव्य की जननी है। लोक साहित्य का अध्ययन मानव और उसके विविध पक्षों के संदर्भ में किया गया है। जैसे– सम्प्रदाय। सम्प्रदाय का शब्दिक अर्थ समप्रदाय= सम का अर्थ समानता से है। प्र का अर्थ है प्रदत्त से। दाय का अर्थ है भाग से। कहने का आशय कि लोक साहित्य को विश्व का कोई व्यक्ति चाहे किसी सम्प्रदाय का होगा। इसको अपना सकता है। उसका नैतिक अधिकार है। सारांशतः हम कह सकते हैं कि साहित्य, संगीत, कला की त्रिवेणी में अवगाहन करके ही मानव का मानस पवित्र होता है। यही नहीं परमानन्द को प्राप्त करता है। लोक साहित्य मे जन–जीवन की झांकी मिलती है।

Folk literature has its own specialties. Mass culture is visible. Simplicity topped in simplicity and naturalness. Folk tale is the father of all the fiction of the world. Folklore is the mother of gross poetry. Folk literature has been studied in the context of man and its diverse facets. Like - community. The word meaning of the community is Sampradaya = Sama means equality. Pr means by conferred. Dya means part. To say that any person of the world, folk literature, will belong to any community. Can adopt it. He has moral authority. In summary, we can say that human mind is sanctified only by digging into the triveni of literature, music, art. Not only this, one attains bliss. A tableau of public life is found in folk literature.

मुख्य शब्द : अवगाहन, त्रिवेणी, झांकी, राष्ट्रवाद, सम्प्रदाय, फरातवादी, भटकते।
Awagahn, Triveni, Tableau, Nationalism, Sect, Euphrates, Wandering.

प्रस्तावना

लोक साहित्य के अध्ययन में कई सम्प्रदाय स्थापित हो गये हैं। पहला भारतीयवादी सम्प्रदाय, दूसरा एन्थ्रोपोलॉजिकल सम्प्रदाय एवं तीसरा लोकवादी सम्प्रदाय। सच में लोक साहित्य का क्या सम्प्रदाय है। इस पर हम विद्वानों के मतानुसार खण्ड–खण्ड में बांटकर अध्ययन करेंगे। यहाँ हमारी भूमिका बढ़ जाती है कि लोक साहित्य धर्म से जुड़ती है, या समाज से। जाहिर है कि लोक साहित्य का वैज्ञानिक अध्ययन उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में आरम्भ हुआ था। कुछ विद्वान इस प्रणाली का जन्म रोमांटिक विचारधारा के साथ जोड़ते हैं, कुछ रेनेसाँ (Renaissance) यूरोपीय पुनर्जागरण से, कुछ इसका आरम्भ आधुनिक राष्ट्रवाद के उदय से मानते हैं। सच क्या है ?

साहित्यावलोकन

कहना न होगा जो मान्यतायें हमारे सामने दिखाई दे रही है। उस मान्यताओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचारधारा राष्ट्रवादी विचारधारा है। इसके कारण भी साफ है कि लोक साहित्य की उत्पत्ति फ्रांसीसी राज्य क्रांति का परिणाम था। सामन्तवाद के विरूद्ध जन चेतना का विकास हुआ, यह सामन्तों की नहीं जन समुदाय द्वारा होता है।[1], इसके बाद ही संकलन और अध्ययन आरम्भ होता है। प्रथम प्रकाशन नेपोलियन के युद्धों के समय से होता है। सोकोलोव ने लिखा है– लोकवार्ता के पहले रोमांटिसिज्म संस्करण के प्रकाशन में राजनीति उद्देश्य स्पष्ट और उग्र रूप में प्रकट किये गये हैं। इस प्रकार इसके कई सम्प्रदाय स्थापित हो गये।

भारतीयवादी सम्प्रदाय

1. उप सम्प्रदाय है।

2. धर्म गाथा एवं भाषा वैज्ञानिक सम्प्रदाय
3. बेन्फे का सम्प्रदाय
4. फरातवादी सम्प्रदाय[2]

एन्थ्रोपोलॉजिकल सम्प्रदाय

1. मनोविज्ञानवादी सम्प्रदाय
2. टोनावादी सम्प्रदाय
3. ऐतिहासिक सम्प्रदाय[3]

लोक साहित्यवादी सम्प्रदाय

1. रूपक तत्वीय सम्प्रदाय
2. इह्यमरीय सम्प्रदाय
3. गाथावादी सम्प्रदाय
4. अवशेषवादी सम्प्रदाय
5. मनोविश्लेषणवादी सम्प्रदाय
6. हेतु कथावादी सम्प्रदाय
7. व्यक्तिवादी सम्प्रदाय
8. लोकवादी सम्प्रदाय

इन सम्प्रदायों में दो ही महत्वपूर्ण हैं। रूपक तत्वीय एवं इह्यमरीय सम्प्रदाय। अब एक एक सम्प्रदाय की क्रमशः चर्चा करेंगे।

भारतीय सम्प्रदाय

भारतीय सम्प्रदाय से आशय यह है कि लोक साहित्य का जन्म भारत में हुआ है। और भारत से ही अन्य देशों में पहुँचा है। इसको मानने वाले विद्वान ओरिण्यटलिस्ट भारतीयवादी हैं। इनका मानना है कि लोक कथाओं और धर्म गाथाओं के जन्म लेने और रूपान्तिरित होने के मूल में शब्द विकार निहित है। इसे ही मैक्समूलर ने मैलेडी ऑफ वड्र्स कहा है।[4], जिसे ऐतिहासिक तुलानात्मक पद्धति भी कहा गया है। या जिसे व्युत्पत्ति शोधक प्रणाली भी कहते हैं । इसी क्रम में इसके उप सम्प्रदाय विकसित हो गये हैं। क्रमशः अध्ययन करेंगे।

धर्मगाथा एवं भाषा विज्ञान सम्प्रदाय

प्रसिद्ध वैज्ञानिक हेल्म ग्रिम और जेकब ग्रिम ने इसे माइथोलोजिकल अथवा धर्म गाथा सम्प्रदाय कहा है, और यही से भारतीय सम्प्रदाय का जन्म हुआ हैप् विश्व की समस्त लोक साहित्य का उदगम स्थल एक ही है। ये गाथाएँ भाषा विकास के कारण ही विभिन्न रूपों में विकसित हुई हैं। जिसका समय 1959 माना गया है।

प्रसारवादी सम्प्रदाय

यह सम्प्रदाय कहता है कि विविध देशों में समान गाथाएँ पायी जाती है। इसका मूल कारण लोक साहित्य का प्रसार एक स्थान से दूसरे स्थान को होता रहा है।

बेल्फे का सम्प्रदाय

यह उधारवादी सिद्धान्त है। (Theory of borrowing) कहा जाता है। बेल्फे स्वीकार करते हैं कि समस्य धर्मगाथाओं का मूल उद्गम स्थल एक ही है। पर यह बात अस्वीकार करते हैं कि समान धर्म गाथाओं वाली जातियाँ एक ही परिवार से सम्बद्ध हैं। उनका तर्क भी विचारणीय है कि विभिन्न जातियों द्वारा ये गाथाएँ एक ही मूल स्रोत से उधार ली गई होंगी ।[5],

फरातवादी सम्प्रदाय

इस सिद्धान्त के लोग मानते हैं कि समस्त धर्म गाथाओं का जन्म फरात (यूक्रेटीज इराक) देश में हुआ है। परन्तु पुष्टता न होने के कारण इसको मान्यता नहीं मिल पायी है। इसी क्रम में–

एन्थ्रोपोलांजिक सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय के लोगों की मान्यता है कि गाथाओं का प्रसारण साम्य के कारण नहीं हुआ है। बस मानवीय स्वभाव, मानसविचार, पद्धति और स्वभाव जन्म समता के कारण गाथाओं का प्रसार हुआ है। अंग्रेज विद्वान टेलर ने सन् 1872 में इसकी रूपरेखा प्रस्तुत की।

इस सम्प्रदाय से तीन उपसम्प्रदायों का उदय हुआः–

मनोवैज्ञानिकवादी सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय के मानने वाले कहते हैं कि लोक तत्वों का उदय मनुष्य के मानस में स्वप्नों के द्वारा हुआ है। फ्रायड कहते है कि– लोक कथाओं के अभिप्रायायें का निर्माण दमित काम वासना के परिणाम स्वरूप होता है।[6] इसी प्रकार

टोनावादी सम्प्रदाय

रूसी वैज्ञानिक जेम्स फ्रेजर का कहना है कि लोक साहित्य और इतिहास के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कियाा। गिलर ने समाधान प्रस्तुत किया है – (1) कहाँ, (2) कब (3) किन ऐतिहासिक तथ्यों पर (4) किन काव्य स्रोतों के साथ निर्मित हुआ है।

लोक साहित्यवादी सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय को ''फिनीशियन सम्प्रदाय'' के नाम से जाना जाता है। इसका जन्म फिनलैण्ड मे हुआ। पहले प्रतिपादित करने वाले विद्वान जूलियस क्रोई है। इनका कहना है कि लोकवार्ता का अपना पृथक इतिहास और विस्तार क्षेत्र होता है। जैसा कि धर्म गाथा में मिलता है। इस पद्धति मे पूर्णवर्ती समस्त अध्ययन पद्धतियों को अस्वीकार किया गया है। इसमे न धार्मिक दृष्टिकोण का आधार लिया गया है। न मनुष्य के स्वभाव और आदिमानस पर विचार किया जाता है। और न लोक साहित्य के अतीत में प्रवेश करने की चेष्टा की जाती है।

इसी सम्प्रदाय के अन्तर्गत दो महत्वपूर्ण उल्लेखनीय हैं–

रूपक तत्वीय सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय के अनुसार धर्मगाथाओं और संस्कृतियों मे आने वाले विभिन्न देवता किसी प्राकृतिक अथवा दिव्य तत्व के प्रतीक होते है, जैसे विष्णु राम जी के प्रतीक हैं, हनुमान वायु के, और इन्द्र मेघों के प्रतीक हैं। ऐसे ही पाश्चात्य में भी ऐसे पाये जाते हैं जैसे–हाईड्रोक्लोरिक प्रतीक है, दमकल अग्नि का प्रतीक है आदि।

इह्वयूमरीय सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक इह्वयूमरीय या इह्वयूमर था। इनका कहना है कि प्रत्येक धर्मगाथा और लोकगाथा में किसी न किसी ऐतिहासिक तथ्य को लपेटकर तथा तोड़ मरोड़ कर रखा गया हैं।[7],

उद्देश्य

लोक साहित्य के सम्प्रदाय से स्थानगत, परिवेशगत, समकालीन लोक जीवन के सोच, आचार, विचार, रूढ़ियों, आस्था, मान्यताओं एवं आपसी जीवन

विनियम को रेखांकित करता है। आज धर्म का इतना बोल बाला है कि, दलित आवाज दे रहा है, स्त्री चिल्ला रही है, बाजार बोल रहा है। इन सारे सवालों का हल है लोक साहित्य का सम्प्रदाय। एक्ट लोकली थिंक ग्लोबली में लोगों का विश्वास है। आज अपने पर किसी को भरोसा नहीं। जातिवाद, सम्प्रदाय में लोग बटते जा रहे हैं, एक दूसरे खटकते जा रहे हैं, इस लेख का उद्देश्य यहीं है कि रूढ़ियों भेदभावों, और कुसंस्करों को मिटाकर विश्वमत रखने की जरूरत है। इसका मूल संदेश घृणा, क्रोध, ईष्या, अहंकार को भूलकर इस डिजिटल दुनियां में लोक साहित्य के सम्प्रदाय को समझना होगा। जो मेहनतकश, छल–कपट से दूर रहकर सुख की कामना करता है। सत्य और न्याय की प्रतिष्ठा करता है–जैसा कि

जन्म है सिर्फ करम के लिए
धरम है सिर्फ भरम के लिए
इसके आलावा जो कुछ है, पाप है।
अगले–जन्म के लिए।।

निष्कर्ष

लोक साहित्य के सम्प्रदाय से पता चला है कि, इसकी जड़े कहाँ हैं। राष्ट्रवादी है। रेनसां पुनर्जागरण से है। बहरहाल लोक साहित्य का अन्य मानविधियों से किस तरह आत्मसात कर लेती है। यह इसकी मजबूती है इसके द्वारा लोक मानस का उद्घाटन होता है। जैसे ग्रामीण जन की वस्तु न रह कर शिष्ट समुदाय के अध्ययन मनन की वस्तु बन गयी है। की आवश्यकता नहीं है कि युग की प्रवृत्ति तथा परीक्षार्थी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सम्पूर्ण विवेचन प्रश्नोत्तर शैली में किया गया है। इसका लाभ अवश्य मिलेगा। साथ ही विश्व का ऐसा कोई, ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग, और धर्म नहीं हैं, जो इसमें न आता हो। यानी सम्पूर्णता का साहित्य हैं। लोक साहित्य का सम्प्रदाय। जिस दिन लोक साहित्य को अपना लेंगे उतना ही बेहतर होगा। यकीन मानिए दुनियां के अधिकतर मसले खत्य हो जायेंगे। लोक साहित्य हमारा माँदरे वतन है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *लोक साहित्य के सिद्धांत एवं परम्परा –राजेस्वर चतुर्वेदी लोक साहित्य के साम्प्रदय आधाय 04 पृष्ठ –24*
2. *वही पृष्ठ– 25*
3. *वही पृष्ठ –26*
4. *वही पृष्ठ –25*
5. *वही पृष्ठ – 25*
6. *वही पृष्ठ – २६*
7. *वही पृष्ठ –26*